Dr. M.K. Jha.
Dept of Sociology.
V.S.J college,
Rajnagar

B.A. part-1
Sociology (Hons)
paper-1

1

Introduction to Sociology.

सामाजिक मूल्य को परिभाषित कीजिए। सामाजिक नियंत्रण में मूल्य की भूमिका की विवेचना कीजिए।

सामाजिक मूल्य एक सामाजिक मानक या एक ऐसा पैमाना है जिसके द्वारा हम किसी वस्तु, व्यवहार, लक्ष्य, साधन, गुण आदि को अच्छा या बुरा, उचित या अनुचित, वांछित एवं अवांछित ठहराते हैं। इसलिए हम सामाजिक मूल्य को उच्चस्तरीय सामाजिक मानदण्ड भी कहते हैं।

सामाजिक मूल्य समाज की एक उपज है क्योंकि व्यक्ति समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा मूल्यों को सीखता है और आन्तरीकृत करता है तथा इन्हीं के अनुरूप आचरण करने सोचता है। सामाजिक मूल्यों को प्राप्त करना व्यक्ति की इच्छा बन जाती है। सामाजिक मूल्यों का निर्माण सम्पूर्ण समूह एवं समाज के सदस्यों की पारस्परिक अन्तःक्रिया के दौरान होता है। अतः ये सारे समूह या समाज की वस्तु है। समाज एवं संस्कृति में भिन्नता के कारण ही सामाजिक मूल्यों में भी भिन्नता पायी जाती है।

R.K. Mukerjee ने लिखा है "values may be defined as socially approved desires and goals that are internalized through the process of conditioning learning or socialization and that become subjective preferences, standards and aspirations."

अर्थात् मूल्य सामाजिक रूप में मान्यता प्राप्त समूह की वे इच्छाएं अथवा लक्ष्य हैं जिनका सामाजिक सीख की प्रक्रिया के द्वारा व्यक्ति के जीवन में अन्तरीकरण हो जाता है और इस प्रकार व्यक्ति इन्हीं को अपने व्यवहारों की प्राथमिकताएं, मानदण्ड और आकांक्षाएं मान लेता है।

H. M. Johnson के अनुसार " मूल्यों को एक धारणा या मानक के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो सांस्कृतिक हो सकता है या केवल व्यक्तिगत और जिनके द्वारा वस्तुओं की एक साथ तुलना की जाती है और वे एक-दूसरे के संदर्भ में स्वीकार या अस्वीकार की जाती हैं, वांछित या अवांछित, अच्छी-बुरी अधिक या कम उचित मानी जाती हैं।"

वास्तव में सामाजिक मूल्य एक मानक है जो सामूहिक मान्यताओं पर आधारित रहता है। मूल्य हमारे व्यवहार की कसौटी है जो उचित-अनुचित व्यवहार का मूल्यांकन करता है साध्य मूल्य के द्वारा सत्य, न्याय, अहिंसा और पारस्परिक सहायता का मूल्यांकन किया जाता है और साधन मूल्य के द्वारा सुरक्षा, जीवन-निर्वाह, सम्पत्ति, व्यवसाय, नौकरी एवं स्वास्थ्य जैसे प्रयोजन का मूल्यांकन किया जाता है आजकल, साध्य मूल्य से सांस्कृतिक जीवन को निर्मित किया जाता है वहीं साधन मूल्य से जीवन की अस्तित्व बचाई जाती है।

सामाजिक नियंत्रण में मूल्यों की भूमिका

Role of values in social control.

सामाजिक मूल्य सामाजिक नियंत्रण के प्रभावपूर्ण साधन हैं। ये व्यक्ति एवं समूह पर एक निश्चित प्रकार का व्यवहार करने या न करने के लिए दबाव डालता है। अतएव, सामाजिक मूल्य नियंत्रण के विशिष्ट एवं सार्वभौमिक साधन हैं जो समाज की स्थापना एवं व्यवस्था पर अंकुश लगाकर व्यक्तियों का मानवीकरण करता है। सामाजिक नियंत्रण के क्षेत्र में मूल्यों की निम्न भूमिका मान्य है :-

1. सामाजिक व्यवस्था तथा सन्तुलन - हमारे जीवन या सामाजिक जीवन का निर्माण विभिन्न मूल्यों के कार्यात्मक सम्बन्ध द्वारा व्यवस्थित एवं सन्तुलित किया जाता है जैसे सामाजिक स्तर पर सामूहिकता, समानता, सुरक्षा और नैतिकता ये हमारे मूल्य हैं।

आर्थिक स्तर पर व्यक्ति अपने एवं आश्रितों की आवश्यकता एवं सुरक्षा जैसे मूल्य हैं वहीं राजनीतिक स्तर पर समानता, स्वतंत्रता, न्याय और अधिकार से सम्बन्धित मूल्य हैं नैतिक स्तर के मूल्य में प्रेम, सहानुभूति एव कर्तव्यपालन जैसे मूल्य आते हैं। अर्थात सामाजिक व्यवस्था को विभिन्न मूल्यों द्वारा नियंत्रित एवं संचालित किया जाता है।

2. सामाजिक एकरूपता उत्पन्न करना -
सामाजिक मूल्य सामाजिक सम्बन्धों एवं व्यवहारों में एकता एवं एकरूपता उत्पन्न करता है, क्योंकि मूल्यों का विकास सामूहिक एकमत पर होता है इसलिए इन्हें सम्पूर्ण समाज की मान्यता मिल जाती है जब प्रत्येक व्यक्ति अपने समाज के मूल्यों के अनुसार ही व्यवहार करता है तो इससे समाज में एकरूपता को प्रोत्साहन मिलता है। Mac Dougall के अनुसार स्वीकृत मूल्य का प्रचलन समूह की एकता का आधार है।

3. व्यक्ति का मानवीकरण - सामाजिक मूल्य जन्मजात पशु-प्रवृत्तियों को प्रभावित करता है व्यक्ति को सामाजिक मूल्य अच्छा प्रेरणा प्रस्तुत करते हैं, जिससे संवेग और इच्छाएं को सामाजिक मूल्यों से जोड़ता है फलत व्यक्ति का दृष्टिकोण मानवीकरण की दिशा एक विशेष योगदान देता है

4. व्यवहारों का निर्देशन - सामाजिक मूल्य की प्रकृति सामूहिक होता है फलत सामाजिक मूल्य में अनिवार्यता एवं बाध्यता के समावेश होता है। जिस दबाव के कारण व्यक्ति का व्यवहार मूल्यों के निर्देशन से होता रहता है।

5. व्यक्ति के अनुकूलन में सहायक -
सामाजिक मूल्य का महत्वपूर्ण काम व्यक्ति को अपनी सामाजिक दशाओं से अनुकूलन करना है। मूल्य समाज के महत्वपूर्ण लक्ष्यों का निर्धारण करते हैं फलत व्यक्ति सामाजिक मूल्यों के आधार पर परिस्थिति और क्रिया के अनुसार अनुकूलन करते रहते है।

6. सांस्कृतिक समाकल - एक समाज के सभी जनरीति, लोकाचार, प्रथाएँ, परम्पराएँ एवं नैतिकता नियम उस समाज के किसी न किसी मूल्य पर ही आधारित होते हैं। यह सामाजिक जितने अधिक महत्वपूर्ण होते हैं संस्कृति भी इतनी ही अधिक व्यवस्थित और प्रभावपूर्ण बन जाती है।

7. व्यक्तित्व का संगठन - एक ओर विभिन्न मूल्य व्यक्ति को सामाजिक जीवन एवं संस्थाओं से अनुकूलन बनाता है वही व्यक्ति दूसरी ओर मूल्य से जुड़कर अपना व्यक्तित्व को सन्तुलित करता है। अर्थात् व्यक्तित्व व्यवस्था बहुत बड़ी सीमा तक उसकी मूल्य व्यवस्था के अनुसार ढल जाती है।

8. आदर्श विचारों एवं व्यवहार का प्रतीक - सामाजिक मूल्य में आदर्श निहित होते हैं। सामाजिक मूल्यों को सामाजिक स्वीकृत एवं मान्यता प्राप्त रहते हैं यही कारण है कि सामाजिक मूल्यों को उस समाज के आदर्श विचारों एवं व्यवहारों का प्रतीक माना जाता है। ये लोगों के विचारों और व्यवहार को निश्चित एवं निर्धारण करते हैं।

अन्त में कहा जा सकता है कि प्रत्येक समाज का अस्तित्व उसके मूल्यों पर आधारित होती है। व्यक्ति के सामान्य एवं विपथगामी व्यवहारों को समझने में मूल्य का विशेष महत्व है। आज पुराने मूल्य जो अन्धविश्वास एवं रूढ़िवादी हैं उन पुराने मूल्य को त्यागकर नवीन मूल्य को ग्रहण करने की आवश्यकता है।

=